IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, December 2023
Impact Factor: 7.301

नवजागरण और राष्ट्रीय साहित्य

डॉ. लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर –हिन्दी

पं. रामलखन शुक्ला राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर उ0प्र0

शोध सारांश– 19 वीं शताब्दी में भारत में नवजागरण का आरंभ हुआ, जिसे भारतीय पुनर्जागरण भी कहा जाता है। यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और बौद्धिक आंदोलन था, जिसने सदियों से चली आ रही रूढ़ियों को चुनौती दी। इस आंदोलन की नींव अंग्रेजी शिक्षा, प्रेस के प्रसार और पश्चिमी विचारों के संपर्क से पड़ी। राजा राममोहन राय को भारतीय नवजागरण का 'जनक' माना जाता है। उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई, बाल–विवाह का विरोध किया और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया। उनके बाद ईश्वरचंद विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले और सर सैयद अहमद खान जैसे समाज सुधारकों ने धर्म, शिक्षा और समाज के क्षेत्र में क्रांति ला दी।

यहीं से राष्ट्रीय साहित्य की धारा फूटती है। राष्ट्रीय साहित्य वह साहित्य है जो देश की अस्मिता, एकता, स्वतंत्रता और सांस्कृतिक गौरव को केंद्र में रखता है। 1857 की क्रांति के बाद साहित्यकारों ने कलम को हथियार बनाया। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती' ने हर भारतीय के मन में स्वदेश प्रेम जगाया। उनकी पंक्ति 'जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं, वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' घर–घर में गूंजी।

इस प्रकार नवजागरण ने तर्क, विज्ञान और मानवता का रास्ता दिखाया, तो राष्ट्रीय साहित्य ने उस चेतना को जन–जन तक पहुँचाया। दोनों ने मिलकर 200 साल की गुलामी के खिलाफ मानसिक और भावनात्मक भूमि तैयार की। इसी वैचारिक पृष्ठभूमि पर भारत का स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया और जीता गया। नवजागरण और राष्ट्रीय साहित्य आज भी हमें बताते हैं कि देश बनता है विचारों से, और विचार बनते हैं साहित्य से।

मूल शब्द– हुकूमत, अस्मिता, उत्प्रेरित, नाजायज, नजराना, नब्ज, पुनरूत्थान।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य की भूमिका अहम रही है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक बहुत बड़ा संघर्ष राष्ट्रीय कवियों का है स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास विदेशियों द्वारा अपने धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में हस्तक्षेप के विरोध में था। इस विद्रोह की तीव्रता और इसके भयावह अनुभव ने अंग्रेजों को यह समझा दिया कि इस देश के सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक दखल–अंदाजी ब्रिटिश हुकूमत पर भारी पड़ेगी, इस विद्रोह की गूंज इतनी दूर तक फैल गई की ईस्ट इंडिया कंपनी से शासन की बागडोर ले ली गई। जिसके वजह से अंग्रेजों ने भारतीय नागरिकों पर इस तरह का जुल्म ढ़हाने लगे की लाखों–लाखों की हत्या करवा कर भारतीयों के मनोबल तोड़ना चाहा, बल्कि उसने भारत संबंधी नीतियां बदल डाली। यह कहा जा सकता है कि सन 1857 में भारतीय अपनी सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए आंदोलन नहीं करते तो देश की पहचान ही संकट में पड़ जाती। इसी कारण से प्रथम स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश कंपनी शासन ने 'पलवाई' कहकर पुकारा, अपने बलिदान और संघर्ष से यह दिखा दिया कि अपनी संस्कृति और धर्म के प्रश्नों पर उनका संघर्ष कितना गहरा है ।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 3, Issue 1, December 2023 Impact Factor: 7.301

स्वाधीनता आंदोलन का आरंभ 1857 ई0 से भारतेंदु युगीन रचनाकारों के समय से देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतेंदु युगीन रचनाकार जिस नवजागरण को जन्म दे रहे थे, उसका कोई संपर्क 1857 ई0 स्वाधीनता क्रांति से नहीं था। भगवान दास माहौर ने अपनी पुस्तक में यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि भारतेंदु युगीन हिंदी लेखन पर 1857 ई0 का प्रभाव था। उदाहरण के आधार पर देखा जाए तो हिंदी लेखकों द्वारा अंग्रेजी शासन के प्रति कही– कहीं अपने रचनाओं के माध्यम से असंतोष प्रकट किया जा रहा था। महावीर प्रसाद द्विवेदी संपादित सरस्वती पत्रिका के अध्ययन के आधार पर एक लेख में दिखाया गया है कि किस प्रकार 20 वीं शताब्दी के प्रथम दशक में सिपाही विद्रोह के नायकों का तिरस्कार और अंग्रेजों के पिट्ठुओं राजाओं, जमीदारों की प्रशंसाएं पत्रिकाओं में छपती थी। 'औपनिवेशिक शक्तियों का प्रभाव और गलत नीति ज्यादा घातक तब हो गयी जब वर्ण–व्यवस्था और जाति में बटे देशवासियों ने राज–पाठ के साथ–साथ, सही–गलत का ज्ञान और चिंतन शक्ति बढ़ी। भारतेंदु की कविता बताती है कि किस तरह आलस्य और कायरता का साम्राज्य चारों ओर दिखाई पड़ रहा है। मूर्खता दुश्मनी और आपसी फूट में देश डूबा हुआ है। देशवासी कोई कौशल नहीं सिखाते सिर्फ उदरपूर्ति में लगे रहते हैं। सारा धन विदेश जा रहा है। किसी को कोई चिंता नहीं होती। इस व्यथा कथा के अलावा भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने मुकरियां में लार्ड रिपन के द्वारा किए गए कार्यों की सराहना और साथ ही अंग्रेज और अंग्रेजी भाषा की दूरुहता का चित्रण भी किया है।'

हिंदी साहित्य में नवजागरण साहित्य के प्रति कवियों की सच्ची निष्ठा और समर्पित भाव था। साहित्य में राष्ट्रीय कवियों ने आंदोलन का संघर्ष गाथा की गीत लिख रहे थे। जिससे लोगों को विद्रोहियों के प्रति जागरूक करना था, नवजागरण की पहचान उस समय के लेखक गणेश शंकर 'विद्यार्थी', माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे कवियों की चिंताएं बढ़ती जा रही थी। गणेश शंकर विद्यार्थी जी की राजनीतिक चेतना उस समय के अनेक दूसरे कवियों से अधिक थी। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन की कविता ही नहीं लिखी अपितु स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भाग भी लिया। इस प्रकार वे स्वाधीनता आंदोलन के कवि और कार्यकर्ता दोनों हैं। शंकर जी के राजनीतिक दृष्टिकोण के निर्माण में लोकमान्य तिलक के व्यक्तित्व और चिंतन की महत्वपूर्ण भूमिका है, अध्यापन के समय उन्होंने कई कविताओं में गांधी जी का उल्लेख किया है और गांधी जी के बनाए आंदोलन का समर्थन किया है लेकिन उनका राजनीतिक दृष्टिकोण मुख्यतः तिलकमार्गी लगता है। उन्होंने तिलक के गिरफ्तार होने और जेल जाने पर कविता लिखी थी जो तिलक के पत्र 'केसरी' में उद्धृत है।[1] अंग्रेजों ने शोषण के बल पर इस देश के गरीबों को इस किनारे कर दिया था की किसान की फसले अधिक से अधिक हिस्सा जमींदार, नवाब और अंग्रेज की जेब में पहुंच जाती थी। किसानों– मजदूरों को अंग्रेज हकीमों और जमीदारों दोनों के शोषण तले पीसना पड़ता था, जिसकी छटपटाहट राष्ट्रीय कवियों में देखी जा रही है।

भारतीय नवजागरण का राष्ट्रवाद और राष्ट्रवादी आंदोलन के विकास में समाचार पत्र एक कारगर हथियार के रूप में साबित हुआ। ब्रिटिश सरकार भारतीय व्यवस्था को कुचलती हुई सत्ता शासन में बनी रहना चाहती थी। इधर राष्ट्रीयता और जनतंत्र की भावनाओं से उत्प्रेरित संपन्न साहित्य और संस्कृति की रचना हो रही थी, जिसके बीच महान वैज्ञानिक, कवि, इतिहासकार, समाजशास्त्री, दार्शनिक, और शिक्षाशास्त्री उत्पन्न हुए, जो जनता के जटिल समस्याओं को समझा और विभिन्न रूपों में समर्पित रूप से कार्य किया, इन सभी समस्याओं को देखते हुए अंग्रेजों ने समाचार पत्रों पर अंकुश लगाए रखना चाहती थी। अंग्रेज सरकार को कई प्रेस एक्ट बनाने पड़े इससे लगता है कि समाचार पत्र राष्ट्रीय आंदोलन में विशेष भूमिका के रूप में स्थापित था। 1910 के इंडियन प्रेस एक्ट ने भारतीय प्रेस पर शिकंजा कसा। सरकार बंग भंग के खिलाफ देशव्यापी प्रदर्शनों से डरी हुई थी। अहमदाबाद अंबाला आदि स्थान में सरकार के खिलाफ प्रतिरोध भी हुआ था। एक्ट के तहत सरकार ने प्रिंटिंग प्रेस से रू0– 500 से रू0–

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 3, Issue 1, December 2023 Impact Factor: 7.301

2000 जमा करने का प्रावधान किया था जो आपत्ति जनक प्रशासन की स्थिति में जप्त कर लिया जाना था । प्रेस और प्रतियों की जप्ती का खतरा भी था। भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के लिए 1910 से 14 तक वक्त खासा मुश्किल भरा था। सरकार ने इस दौरान 2072 भाषायी और 50 अंग्रेजी अखबार प्रतिबंधित किये। जब्त भाषाई अखबारों में 114 मराठी, 52 उर्दू और 51 बांग्ला के थे।[2] हिंदी साहित्य का आधुनिक काल पुनरुत्थानवाद, नवजागरण और आधुनिकता के इसी द्वंद से उपजा है। पंडित श्रद्धाराम फुलौरी और भारतेंदु से लेकर प्रसाद, निराला और प्रेमचंद और बाद में प्रगतिशील आंदोलन को इन्हीं विचारधारात्मक संघर्ष के परिणाम स्वरूप देखा जाता है।

स्वाधीनता आंदोलन का सबसे बड़ा आधार भारतेंदु हरिश्चंद्र की राजनीतिक समाज और औपनिवेशिक, सुधारवाद, साम्राज्यवाद और सामंतवाद की होशियारी को समझना। भारतेंदु की कविताओं में एक तरफ राजभक्ति का भ्रम पैदा करती है तो दूसरे तरफ देश की दुर्दशा की वजहों का खुलासा करते हुए राष्ट्रीय एकता के लिए जनता को एक समूह में होकर संघर्ष करने का आह्वाहन भी है। ऐसे ही प्रेमचंद अपने उपन्यासों कहानियों के माध्यम से उन सभी सामंतवादी, साम्राज्यवादी के विचारों का भरपूर पत्रों के माध्यम से दिखाने की कोशिश किया है। 'प्रेमचंद राष्ट्रीय आंदोलन में किसान– जमींदार की ऐसी शर्तों से और किसानों के प्रति कांग्रेस की ऐसी नीति से कभी सहमत नहीं हुए। गांधी जी का समर्थन होने के बावजूद वे इस सवाल पर गांधी जी के विरोधी थे। प्रेमचंद राष्ट्रीय आंदोलन में छोटे जमीदारों की कोई भूमिका न मानते हो, ऐसी बात नहीं। प्रेमचंद के ऐसा मानने के पहले से ही जमींदार राष्ट्रीय आंदोलन में थे। प्रेमचंद भी देख रहे थे कि छोटा जमींदार राष्ट्रीय आंदोलन में है। प्रेमचंद भी चाहते थे कि ये जमींदार और किसान एक साथ मिलकर अंग्रेजों से लड़े लेकिन किस तरह? यह दिखलाया उन्होंने 'संग्राम' नाटक में। यह 1923 ई0 में छपा, लेकिन प्रेमचंद ने इसका खाका इस साल तैयार कर लिया था, जिस साल शुक्ल जी ने सहयोग वाला लेख लिखा, नाटक में एक छोटा जमीदार सबलसिंह अपने असामियों के साथ मिलकर अंग्रेजी राज के खिलाफ और सहयोग आंदोलन में भाग लेता है। अपने इलाके में असहयोग का कार्यक्रम लागू करता है। सरकारी गॉजा– शराब की दुकानें बंद करवाता है, किसानों को सरकारी अदालतों में जाने से मना करता है, पंचायत को खुलवाता है और चरखे का प्रचार करता है। किसान उसका साथ इसलिए देते कि वह राष्ट्रीय आंदोलन को फैला रहा है, क्योंकि सबल सिंह नाजायज लगान इजाफा नहीं करता, नजराना नहीं लेता, बेगार और रसद नहीं मांगता, लगान नहीं उसूलता, बात–बात पर बेदखली का धमकी नहीं देता।[3] प्रेमचंद सदैव निष्पक्ष भाव से स्वाधीनता आंदोलन को नई गति दिया है जिसमें समाज का समग्र वर्ग को राष्ट्रीय स्वतंत्रता और सुरक्षा का प्रयास सदैव उनकी रचनाओं में रहा है। 'रामविलास शर्मा जी के मुताबिक राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी और प्रेमचंद के साम्राज्यवाद–विरोध में यही मुख्य फर्क था। हालांकि श्प्रेमाश्रय' में प्रेमचंद ने किसान–जमींदार संघर्ष का निपटारा प्रेम के साथ किया था, लेकिन वह मुख्य कसौटी नहीं। मुख्य कसौटी यह है कि 'प्रेमचंद किसान–जमींदार संघर्ष को स्वाधीनता आंदोलन के लिए आवश्यक समझते हैं या अनावश्यक। इस कसौटी पर उनके उपन्यासों को रखने से किसान संघर्ष के प्रति प्रेमचंद और गांधी जी के दृष्टिकोण अलग–अलग दिखाई देते हैं।'[4]

हिंदी नवजागरण के व्यापक संदर्भ में लोक परंपरा और लोक शैलियों पर आधारित रचनाओं का मूल्यांकन हो रहा था जिसमें अनेक प्रकार के विचारधाराएं लोक पक्ष से परिचित हो रही थी। जिसमें एक ओर जनता में नई चेतना जाग रही थी तो दूसरी ओर वे साहित्यकार, जो जनता के हृदय की धड़कन और नब्ज पहचान रहे थे। नवजागरण का अर्थ था– परंपरागत विषयों, काव्य–रूढ़ियों, छंदों , भाषा को त्यागकर नए पथ पर अग्रसर होना। कवियों ने समसामयिक समस्याओं पर लिखा, छंद तथा काव्य रूपों में नए प्रयोग किये, प्राचीन काव्य विषयों दरबार और कचहरी की भाषा को त्याग, जनभाषा को अपनाना शुरू किया।[5]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 3, Issue 1, December 2023 Impact Factor: 7.301

भाषा का आधार खड़ी बोली एवं विभिन्न गद्य विधाओं में रचनाएं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में ऐसी भूमिका निभाई की जन–जन के कानों में स्वाधीनता संग्राम की आवाज पहुंच गई और लोगों में राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से संघर्ष करना जारी रखा।

सन्दर्भ–

1- नवजागरण कालीन कवियों की पहचान–हेमंत कुकरेती– वाणी प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ सं0 29
2- आलोचना की सामाजिकता– मैनेजर पांडेय –वाणी प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ सं0 219
3- भारत में जनसंचार–जे0कुमार– जयको पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद पृष्ठ सं0– 80
4- राष्ट्रीय आंदोलन और साहित्य–वीर भारत तलवार– वाली प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ सं0 60
5- वही पृष्ठ सं0 83
6- हिंदी साहित्य का आधा इतिहास – डॉ0 सुमन राजे–वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 228